SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अन्तःकरण से अर्न्तराष्ट्रीय भाषा की ओर हिन्दी

दुर्ग विजय, हिंदी विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
दुर्ग विजय

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/12/2023
Plagiarism : 01% on 20/12/2023

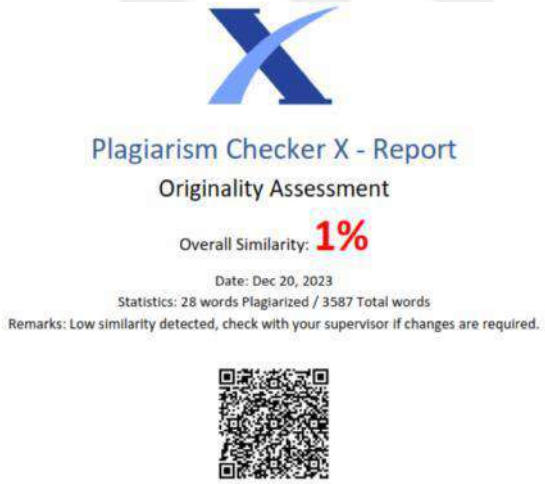

शोध सार

भाषा मनुष्य की जीवन पद्धति का एक महत्वपूर्ण अंग है, भाषा के बिना जीवन यापन कितना कठिन होता यह कौन नहीं जानता। भाषा जहां मनुष्य के जीवन को सरल, रोचक एवं आनंददायक बनती है, वहीं उसके विचारों तथा संस्कारों को अभिव्यक्ति के साथ ही साथ साहित्य के रूप में संरक्षित भी करती हैं। वर्तमान में भारतीय विचारों की धरोहर हिंदी भाषा संभाले हुए हैं। हिंदी विविध क्षेत्रों में अपनी उपादेयता को सिद्ध कर चुकी है। भारतीय सीमाओं से निकालकर आज कई देशों में हिंदी का परचम फहरा रहा है। निश्चय ही यह भाषा अब अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में आकर ले रही है और विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में आज हिंदी प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही है।

मुख्य शब्द

भाषा, हिंदी, जैन धर्म, शिक्षा.

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व सघन अंधकार में नीमग्न हो गया होता यदि इस ब्रह्माण्ड में शब्द ज्योति की उत्पत्ति नहीं हुई होती। मानव उत्पत्ति के साथ ही भाव या विचार अभिव्यक्ति के माध्यम से, भाषा का विकास साथ–साथ हुआ। प्रकृति की विविधता तथा जलवायु एवं परिवेष के आधार पर मानव प्रकृति के अनुरुप अपने आप को इस सृष्टि में स्थापित किया साथ ही भाव एवं विचारों को अपने साथ लेकर चला, उन्हें संरक्षित करने के लिए एक सांकेतिक कोड का प्रयोग किया गया समय एवं परिस्थिति के अनुसार आगे चलकर भाषा के रूप में विकास हुआ।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर भाव एवं विचारों को वाणी के माध्यम से व्यक्त एवं उसे लिपिबद्ध भी किया। विश्व की भाषाऐं ध्वनि प्रतीकों की एक वैज्ञानिक व्यवस्था है जो एक क्रम तथा अपनी व्यवस्था के अनुसार ध्वनि व्यक्त करने में सहायता करती

है। संस्कृत के भाष् धातु से भाषा शब्द का विकास हुआ इसके विविध रुप देखने को मिलते हैं। उसी के अनुरुप इसके विचार तथा उच्चारण भी अलग–अलग होते हैं। इस प्रकार भाषा का गहन सम्बंध मानव समाज से है। वह समाज में रहकर अपना विकास कर पाती है। भाषा किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है बल्कि मानव अपने अनुरुप सीखता है। भाषा एक सामाजिक सम्पत्ति है यह परंपरागत वस्तु है जो समय के अनुरुप परिवर्तनशील भी हैं जिसके विविध रुप हैं। इसकी प्रकृति एवं रचना अलग–अलग हैं। यह मानव से पोषित पल्लवित होती रहती है। समय के साथ यह जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर होती है।

विश्व के भाषा विकास का अध्ययन करना, समग्र भाषा एवं उसके इतिहास का पता लगाना बहुत ही कठिन है। सभ्यताएं विलुप्त हुई तो भाषा भी विलुप्त हो गयीं हैं जिनका सम्पूर्ण अध्ययन करने की आवश्यकता है। मानव जाति अपने ज्ञान को एवं सभ्यता को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है, उसे समझना बहुत कठिन है। इतिहास में बहुत सी ऐसी लिपि हैं जो अबतक नहीं पढ़ी जा सकी हैं। वर्तमान में मानव, भाषा के विकास के इतिहास तथा लिपियों को पढने का प्रयास कर रहा है, साथ ही सम्पूर्ण विश्व के भाषा इतिहास को जानने के लिए प्रयत्नशील है।वहीं लिपि के विकास को भी वैज्ञानिक रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है। भाषा विकास का अध्ययन करते हुए वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर की भाषा एवं अर्न्तराष्ट्रीय भाषा के रुप में विकास की यात्रा तय की है। भाषा विकास के उच्चतम शिखर से सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव के रुप में देखने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसी क्रम में हिन्दी भाषा अपने विकास के पथ पर अग्रसर है और सम्पूर्ण विश्व में अपना स्थान बनाने में किस प्रकार सफल हो रही है इसका सम्पूर्ण अध्ययन करने की आवश्यकता है।

विषयवस्तु

मानव के अन्तःकरण से उद्वेलित होने वाला भाव के सबसे छोटे रुप को बोली कहते हैं। एक व्यक्ति की बोली दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है, अतः बोलियों के समुह को विभाषा या उपभाषा कहा जाता है। सम्पूर्ण विश्व के भाषा का समग्र अध्ययन करने का प्रयास करते हुए एक उप महाद्वीप भारत वर्ष के कुछ भू–भाग पर बोले जाने वाली भाषा हिन्दी के इतिहास को जानने का प्रयास किया गया है। विकास की यात्रा से लेकर वर्तमान समय में किन–किन परिस्थितियों से गुजरते हुए वर्तमान स्वरुप में यह भाषा देखने पढ़ने, समझने के साथ–साथ जन समूह को एक मंच के नीचे किस प्रकार लाने में सफल है इसके इतिहास को जानने का प्रयास किया गया हैं। हिन्दी को हिन्द देश की भाषा कहा जाता है। यह भाषा लम्बे समय से संघर्ष करते हुए विश्व के सभी भाषाओं को अपने में समाहित करते हुए अपने अस्तित्व को बनाये रखने में किस तरह सफल है, इसको जानने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान समय में हिन्दी अन्तःकरण से अर्न्तराष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है। सम्पूर्ण विश्व के जनमानस इस भाषा को सीखने का प्रयास कर रहे हैं साथ ही वैज्ञानिक युग में हिन्दी कम्प्यूटर की भाषा बनने में सक्षम हो गई है। भारत सरकार अपनी शासन व्यवस्था में इस भाषा का प्रयोग करती है। शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्य क्रम हिन्दी माध्यम में आ रहे हैं। हिन्दी भाषा बहते हुए जल के समान है जिसे मानव अपने विचार के अनुसार उसे व्यक्त करता है तथा इसके रुप एवं उच्चारण में भिन्नता को दर्शाता है, फिर भी अपने रुप को बदल नहीं सकता। जिस प्रकार जल खारा या मीठा होने के बावजूद भी वह जल होता है, उसी प्रकार भाषा के अलग–अलग रुप हो जाने के बाद भी वह भाषा ही होती है। किसी भी भाषा को अगर देश में शासन का सहयोग प्राप्त होता है तो वह भाषा लोकतंत्र की मजबूती का एक माध्यम बन जाती है। भारत में लगभग 121 भाषाएं हैं जो अलग–अलग क्षेत्र में बोली जाती हैं। इन सभी भाषाओं में कुछ की अपनी लिपि तथा ध्वनि है। ऐसी स्थिति में देश को संगठित कर पाना बहुत ही मुश्किल है, क्योंकि आजादी के बाद आंध्रप्रदेश का विभाजन भाषा के आधार पर हुआ यह विभाजन का जीता–जागता उदाहरण है। देश की आजादी में हिन्दी भाषा का जो योगदान रहा है उसे भूलना नहीं चाहिए। वर्तमान में हिन्दी को भारत के सभी राज्यों में समझने वाले मिल जाएंगे। एक लम्बे समय से संघर्षमय सफर करते हुए हिन्दी भारत के साथ विदेशो में भी पढ़ी एवं बोली जाती है जैसे सिंगापुर, मलेशिया, त्रिनिनाद, टोबैगो, सूरीनाम, फिजी, आदि देशों में। वर्तमान समय में हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने में सक्षम प्रतीत हो रही है।

मनुष्य समाज से ही सब कुछ सीखता है। भाषा मानव के विचार अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जो मानव मस्तिष्क के चिंतन से कंण्ठ की उपज है। संस्कृत साहित्य के विद्वान पतंजलि ने कहा है कि 'व्यकतावाची वर्णाऐषातइमेव्यक्तवाच' अर्थात् जो वाणी वर्णों में व्यक्त होती है उसे भाषा कहते हैं। वहीं किषोरी दास वाजपेयी ने अपने शब्दो में कहा कि "विभिन्न अर्थो में संकेतिक शब्द समूह की भाषा जिसके द्वारा हम अपने मनोभाव दूसरों के प्रति सरलता से प्रकट करते हैं" वहीं बाबूराम सक्सेना ने भी परिभाषित करते हुए लिखा कि "जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है उनको समष्टि रुप में भाषा कहते हैं"।

भाषा के इतिहास का अध्ययन करना बहुत ही चुनौती पूर्ण कार्य है। सम्पूर्ण विश्व में 18 भाषा परिवार हैं जिन्हें अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से 4 वर्गो में रखा गया है। वर्तमान समय में विश्व में 2796 (लगभग 3000 हजार) भाषाएं बोली जाती हैं ये भाषाएं किसी न किसी परिवार से आती हैं इन परिवारों को 4 वर्गो में रखा गया हैः

1 यूरेशिया परिवार।
2 अफ्रीका परिवार।
3 प्रशांन्त महासागरीय परिवार।
4 अमेरिकी परिवार।

यूरेशिया वर्ग में 10 परिवार आते हैं उसी में भारोपिय परिवार है। हिन्दी, शौरसेनी अपभ्रंस से विकसित पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोली है। कुरूमहा जनपद में बोली जाने के कारण इसे कौरवी कहा जाता है। सरहिन्द तक विस्तार के कारण इसे सरहिन्दी, हिन्दुस्तानी, जनपदीय, साहित्य हिन्दी, उच्चहिन्दी, स्टैन्डर्ड हिन्दी, वर्नाक्युलरी, टकसाली, आदि विभिन्न नामो से जाना जाता है। खड़ी बोली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गिलक्राइस्ट ने किया था उसके बाद साहित्यकार सदल मिश्र के द्वारा लिखित पुस्तक 'नासिकेतोपाख्यान' में खड़ी बोली शब्द आया, साहित्यकार लल्लू लाल के 'प्रेमसागर' पुस्तक में भी खड़ी बोली शब्द आया उसके बाद खड़ी बोली का क्रमिक विकास होता गया जिसे आगे चलकर खड़ी बोली नाम दिया गया। लेकिन हिन्दी साहित्य के विकास की प्रारम्भिक अवस्था की तरफ देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि खड़ी हिन्दी, का काव्य भाषा के रूप में प्रयोग करने वाला प्रयोक्ता अमीर खुसरो हैं वहीं भक्ति काल में निर्गुण संत रैदास का पदः

प्रभू जी तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग–अंग वास समानी।।
प्रभू जी तुम घन, बन हम मोरा।
जैसे चितवत चंद चकोरा।।

इन काव्य पंक्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा का विकास प्रारंभ में हो गया था। समय की दृष्टि से देखा जाय तो 19वीं सदी खड़ी बोली की सदी है आगे चल कर खड़ी बोली के दो रुप मिलने लगते हैंः

1. खड़ी बोली का पद्य।
2. खड़ी बोली का गद्य।

कुछ साहित्यकार गद्य एवं पद्य दोनो रुप में मिश्रित चम्पू काव्य के रुप मे लिख रहे हैं। क्षेत्र की दृष्टि से देखा जाय तो इसका विस्तार मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फर नगर, बागपत, खुरजा, बुलंदषहर, देहरादून, अम्बाला, आदि क्षेत्रों में इस बोली का विस्तार है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का काल विभाजन करके देखा जाय तो भारतेंदु युग में काव्य की भाषा ब्रज थी। इस युग में खड़ी बोली को विस्तार देने के लिए काव्य आंदोलन चलाना पड़ा। सन् 1888 में अयोध्या प्रसाद खत्री ने 'खड़ी बोली का पद्य' शीर्षक से पुस्तक लिखा इस पुस्तक की भूमिका फ्रेडरिक पिन्काट ने लिखी थी। इसी पुस्तक से खड़ी बोली आंदोलन को तेज गति मिली। यद्यपि भारतेंदु ने भी खड़ी बोली हिन्दी में – 'फूलों का गुच्छा' और 'दशरथ विलाप' लिखे, भारतेंदु मण्डल के कवियों का मानना था कि ब्रज भाषा जैसी सरसता, कोमलता,

लालित्यता, पद सुकुमारता खड़ी बोली में नहीं हो सकती इसलिए सभी साहित्यकार ब्रज भाषा को सर्वाधिक प्रश्रय दे रहे थे। इसके बाद द्विवेदी युग आता है जो साहित्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इस का नामकरण किया गया है। द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली को अच्छी, शुद्ध, तथा कोमल बनाने का पूरा प्रयास किया है। समकालीन साहित्यकारों को भी हिन्दी भाषा में लिखने के लिए प्रेरित किया। इस युग में हिन्दी भाषा काफी हद तक शुद्ध एवं परिष्कृत हो चुकी थी ।

छायावाद में चलकर यह भाषा व्यक्ति स्वातंत्रय का स्वर, रुढ़ियों से मुक्ति का स्वर एवं स्पंदन की भाषा के रुप में विकास करती है। इस युग में हिन्दी को चित्रात्मक भाषा और लाक्षणिक पदावली की भाषा भी कहा गया तदुपरांत साहित्य के प्रगतिवाद में यह भाषा ऐतिहासिक चेतना वर्ग संघर्ष एवं यथार्थ की भाषा बनती है। इस प्रकार हिन्दी अपने विविध नामों के साथ अनेक उतार चढाव के रास्ते से गुजरते हुए नये युग में प्रवेष करती है साथ ही व्याकरणिक नियमों से परिष्कृत होकर शुद्ध रूप प्राप्त करती है।

विश्व में सभी भाषाओं के दो रुप देखने को मिलते हैं। लम्बी विकास यात्रा तय करने के बाद हिन्दी मानक रुप प्राप्त करती है। खड़ी हिन्दी गद्य की प्रथम पुस्तक 'चंद छंद बरनन की महिमा' है जो कवि गंग द्वारा लिखित है। ये अकबर के दरबारी कवि थे उसके बाद रामप्रसाद निरंजनी की पुस्तक भाषायोगवाशीष्ट में खड़ी बोली हिन्दी के शब्द मिलते हैं।

डॉ. बच्चन सिंह कहते हैं कि 'हिन्दी स्वयं ऐतिहासिक आवश्यकताओं के फलस्वरुप विकसित होती हुई आधुनिक युग के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी'। चार्ल्स विल्किन्स ने नैथेनियस ब्रसी हालटेड कृत 'ए ग्रामर ऑफ बंगाली लैंग्वेज' के लिए पहली बार बंगला टाइप बनाया बाद में नागरी टाइप भी बनाया वहीं श्रीरामपुर मिशन के केरी पंचानन कर्मकार की सहायता से टाइप फाउंण्ड्री खोली गई। नागरी टाइपों का जन्म स्थान हुगली और श्रीरामपुर है यहीं से छपाई का द्वार खुल गया और समाचार पत्र और पुस्तकों का दौर आया। सन् 1780 में जेम्स ए हिक्की ने अंग्रेजी में 'बंगाल गजट' प्रकाशित किया यह पत्र भारत में एक नया प्रकाश लेकर आया उसी क्रम में 1826 में हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई को जुगल किशोर ने सम्पादित किया। 1844 में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के द्वारा बनारस अखबार प्रकाशित किया गया जो मूल रुप से हिन्दी में था। इसके बाद लगातार भारत में समाचार पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी उसी समय भारतीय जनमानस का शिक्षा की तरफ काफी तीव्रगति से झुकाव हुआ। आज जो पाठ्य पुस्तकों की परम्परा चल रही है इसे भारत मे फोर्टविलियम कॉलेज ने ही शुरुआत की थी।

अनेक सामाजिक आन्दोलनों के प्रभाव से हिन्दी की कई बार उपेक्षा भी हुई, अदालती भाषा भी बनी बाद में उसे भी हटा दिया गया। समाचार पत्रों के माध्यम से भारतीय जनता के मन में विचार जागृत होने लगा कि अंग्रेज हमारी व्यवस्था को समाप्त कर देंगे। जन चेतना के परिणाम स्वरुप भारतीय समाज में 1857 में एक विद्रोह होता है। उस विद्रोह से भारतीय जनता आन्दोलन के प्रति सजग हो जाती है साथ ही उसी समय भाषा को लेकर भी विभिन्न प्रकार के लिपि सुधार आंदोलन होते हैं।

भारतीय जनता ने महसूस किया कि विविध संस्कृति एवं भाषा होने के कारण आंदोलन तेज नहीं हो पा रहा है। अतः देश में एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसे भारत की सामान्य जनता समझ सके और आंदोलन भी तेज हो सके। उस समय के साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम से संबंधित काव्य एवं गद्य की रचनाएं करने लगे। काव्यों में वीरता की बातें तथा राष्ट्रप्रेम कूट–कूट कर भरा जाने लगा। कुछ समय बाद नाटक एवं कहानी को रंगमंच के माध्यम से समाज में दिखाये जाने लगे। सामान्य जनता इस भाषा को समझने लगी और हिन्दी को विकसित होने के लिए पर्याप्त माहौल मिला परिणाम स्वरुप हिन्दी सम्पूर्ण भारत की भाषा के रुप में विकसित होने लगी। भारतीय जनता भाषा को लेकर दो गूटों में बंट गई, मुसलमान अरबी फारसी के पछधर थे तो वहीं हिन्दू हिन्दी भाषा का समर्थन कर रहे थे। अनेक आंदोलन के उपरांत जब देश स्वतंत्र हुआ तो आजादी के बाद भारतीय संविधान में हिन्दी को अनुच्छेद 343 के तहत 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ और इसकी लिपि देवनागरी एवं अंको का रुप अर्न्तराष्ट्रीय होगा।

भारत के राज्य उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तरांचल, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, में हिन्दी राजभाषा के रुप में स्वीकृत हैं।

राजभाषा के विकास के लिए अनुच्छेद (344) के तहत आयोग गठन की व्यवस्था की गई है, तथा अनुच्छेद 344 (4) के तहत 30 सदस्यों की संसदीय समिति के गठन हेतु व्यवस्था की गयी है जिसमें 20 लोक सभा के और 10 राज्य सभा के सदस्य होंगे। राजभाषा आयोग का पहला गठन सन् 1955 में हुआ और उसकी पहली रिपोर्ट 1956 में प्रकाशित हुई। अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार व वृद्धि सम्बंधित प्रावधानों का उल्लेख किया गया है। तमाम संघर्ष और उथल–पूथल के बाद हिन्दी अपने विकास के पथ पर अग्रसर है। किसी भी राष्ट्र की अस्मिता और संस्कृत की संवाहक वहाँ की भाषा होती है, क्योंकि इसका सम्बंध जनमानस से होती है वहीं अनुच्छेद 348 के उपबंधों के तहत संसद में कार्य हिन्दी या अंग्रेजी में किये जायेंगे। वर्तमान समय में हिन्दी भारत के सभी प्रांतो में बोली एवं समझी जाने लगी है। चलचित्र के क्षेत्र में हिन्दी एक सषक्त माध्यम के रुप में विकसित हुई है। वर्तमान में हिन्दी की प्रासंगिकता बहुत बढ गई है, हिन्दी भाषा के अर्न्तगत बहुत विधाएं हो गई हैं। साहित्यकार अब उच्चकोटि के साहित्य का सृजन कर रहे हैं और भाषा के विकास के लिए सरकार कटिबद्ध हो गई हैं। सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की भाषा विकास के लिए योजनाएं चलायी जा रही हैं। 1973 में पहली बार विश्व हिन्दी सम्मेलन यात्रा प्रस्ताव में लाया गया। सबसे पहले नागपुर महाराष्ट्र में 10–12 जनवरी 1975 को विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया गया। विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा इंटरनेशनल कार्यक्रम है जिसमें दुनियाँ भर के हिन्दी प्रेमी शोधकर्ता, साहित्यकार, भाषा वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ और पत्रकार इस आयोजन में शामिल होते हैं। प्रारम्भ में हर चार साल पर आयोजन होता था लेकिन अब यह तीन साल पर होता है। उस समय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन किया था और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री शिवसागर राम गुलाम थे। इस सम्मेलन में लगभग 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था तबसे निरन्तर हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। वर्तमान युग में कोई भी भाषा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से जुड़े बिना नहीं पनप सकती यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में केन्द्र सरकार के कार्यालयों में कम्प्यूटर ई–मेल वेबसाइट सहित सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं उपलब्ध होने से वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करना और भी आसान हो गया है। संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के नौ खण्डों पर जारी किए गये राष्ट्रपति के आदेश को सरकार के कार्यालयों द्वारा पालन किया जाने लगा है। विभाग ने वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिन्दी में तैयार करवाने के लिए आवश्यक कदम उठाए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के कुशल मार्ग दर्शन तथा प्रेरणा दायक नेतृत्व में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों की शुरुआत करके कोविड की चुनौती को अवसर में बदल दिया। राजभाषा नीति और माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रयुक्त स्मृति विज्ञान से प्रेरणा लेकर निम्नलिखित स्तंभो पर आधारित 12 'प्र' की रुपरेखा और रणनीति तैयार किया गया है– प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रबंधन, प्रमोशन, प्रतिबद्धता, और प्रयास।

राजभाषा विभाग के अधिकारीगण राजभाषा बैठकों तथा विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राष्ट्रीय बैंको तथा नगर में, राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में आयोजित होने वाले कार्यो में उपर्युक्त का प्रयोग किया जा रहा है। वहीं राजभाषा विभाग के दो प्रशिक्षण संस्थानों केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान व केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने इलेक्ट्रानिक प्लेटफार्म ई–प्रशिक्षण के माध्यम से हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि अनुवाद में प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया है। कार्यालयों में डिजिटल फार्म ई–निरीक्षण द्वारा वर्चुवल निरीक्षण प्रारंभ कर दिया है। केन्द्र सरकार के विभिन्न संगठनो द्वारा गृह पत्रिकाओं के सहज तथा सुलभ पठन से सुविधा प्रदान करने के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट ई–पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म की शुरुआत की गई है।

शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान और (सी–डैक) पुणे के सहयोग से 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' को उन्नत करने का प्रयास जारी है। राजभाषा विभाग भाषा विकास में योगदान देने वालों के लिए राजभाषा

गौरव पुरस्कार एवं राजभाषा नीति पुरस्कार से सम्मानित करने की योजना बनाई है। 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का मुख्य विषय था 'हिन्दी पारंपरिक ज्ञान से कृतिम मेघा तक' सम्मेलन के दौरान भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ वहीं सभी हिन्दी भाषी विद्वानों को विश्व हिन्दी सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्तमान समय में विश्व के 30 से अधिक देशों में हिन्दी पढाई जा रही है। विश्व के 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन केन्द्र खुले हुए हैं। भारत के इतिहास में पहली बार 1977 ई. में अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को हिन्दी में सम्बोधित किया था। इसी क्रम में विश्व हिन्दी सचिवालय मारीशस के मोका गाँव में स्थापित किया गया जो 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है।

कम्प्यूटर के क्षेत्र में हिन्दी

कम्प्यूटर के क्षेत्र में हिन्दी का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है। तकनीकी रूप से 1983 में कम्प्यूटर आपरेटिंग सिस्टम 'डास' पर आधारित हिन्दी शब्द संसाधक अक्षर से कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा का आरम्भ माना जा सकता है जो कि आरम्भिक प्रयास था। देवनागरी लिपि अक्षरात्मक होने के कारण इनके बाह्य रुप में विविधता होने से बहुत सारी समस्याएं आती हैं। भारत सरकार के नेषनल सेंटर फॉर साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी (एन.सी.एस.टी.) ने सभी भारतीय भाषाओं की लिपि को कम्प्यूटर पर स्थापित करने हेतु विषेष अभियान चला रखा है। इंटरनेट की दुनियाँ में हिन्दी का पदार्पण 1995 ई. के आस–पास हुआ। आरम्भ में हिन्दी रोमन लिपि के रुप में थी आगे चल कर यह डायनैमिक फाण्टों में दिखाई पडती है सही मायने में हिन्दी की इंटरनेट पर आगमन 'यूनिकोड' के आने से होती है। आज हिन्दी इंटरनेट पर अपना स्थान बना चुकी है और सभी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाती हुई चली जा रही है।

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया से सम्पूर्ण ब्रह्ममाण्ड सिकुड़ता चला जा रहा है। सम्पूर्ण पृथ्वी एक गाँव के रूप में बदलती जा रही है। इंटरनेट पर बाजार, मीडिया, ई–पुस्तकालय, फेसबुक पेज, मूक्स आदि क्षेत्रों में हिन्दी का प्रसार हो चुका है। संयुक्त राष्ट्रसंघ से अब हिन्दी में सूचनाएं जारी होगीं। राष्ट्रसंघ के महासभा ने हिन्दी भाषा के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है जिससे हिन्दी का प्रचार–प्रसार बहुत तेज गति से हो रहा है। हिन्दी की प्रथम ऑनलाइन साहित्यिक पत्रिका भारत–दर्शन जो की न्यूजीलैंड से प्रकाशित होरही है इसके पश्चात भारत से दैनिक जागरण और वेबदुनियाँ का प्रकाशन हो रहा है जो हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी भाषा अपने विकास के समय से ही निरंतर प्रगतिपथ पर बनी है। यह भारत के बहुसंख्यक जनता के कंठ से उच्चरित होने वाली भाषा है जो भाव को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम के साथ–साथ साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में अपना स्थान स्थापित कर ली है। वहीं शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा का माध्यम बनकर शिक्षा की प्रगति को तेजगति दी है। शासन–प्रशासन की भाषा बनकर राष्ट्र की सेवा में अपना योगदान दे रही है। भारत की प्रतिनिधि भाषा बनकर अर्न्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिनिधित्व कर रही है। हिन्दी भाषा विश्व की तीसरी बड़ी भाषा है जिसमें ज्ञान–विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र से होते हुए विश्व कि भाषाओं में अपना स्थान बना रही है। भारत के एक छोटे से क्षेत्र में बोली जानेवाली बोली व्याकरण के नियमों से परिस्कृत होकर अर्न्तराष्ट्रीय भाषा बनने की ओर कदम बढा चुकी है। इन्टरनेट के क्षेत्र में जिस गति से अपना विस्तार की है निश्चित तौर पर हिन्दी अपनी स्मृद्वि को प्राप्त कर रही है। हिन्दी भाषा को जानने समझने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में विदेशों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। विस्तृत क्षेत्र में एवं बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा अर्न्तराष्ट्रीय भाषा बनने के लिए सक्षम है। अभीं दिल्ली में हुए जी 20 शिखर सम्मेलन में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपना उद्बोधन हिन्दी में दिया, वहीं अमेरिका की प्रवक्ता मार्गरेट मैकलियोड ने हिन्दी में अपना सम्बोधन देकर आकर्षण व चर्चा की केन्द्र बनी हैं। महात्मा गाँधी जी ने भी हिन्दी को जन–जन की भाषा कहा था क्योंकि यह देश को एकता के सूत्र में बाँधने में सक्षम है। हिन्दी भाषा के प्रति लोंगो का जुनून और प्रेम जिस प्रकार से बढ़ रहा है निश्चित तौर पर हिन्दी अर्न्तराष्ट्रीय भाषा बनने के लिए सक्षम है।

सन्दर्भ सुची

1. पुष्पलता रेखा सिंह, (2022), *कार्यालयी हिन्दी और कम्प्यूटर,* एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस आगरा
2. तिवारी भोलानाथ, (2019), *भाषा विज्ञान,* किताब महल प्रकाशन।
3. भारत का संविधान, अनु. 343, 344, 351, संक्षिप्त संविधान।
4. कुमार संजीव, (2015), हिन्दी लुसेन्ट, लुसेंट प्रकाशन, लखनऊ।
5. हिन्दी भाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार साभार।

****